राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

बचन मुतफ़र्रिक़ पिछले महात्माओं के

बचन १

बड़ी भारी अभागता क्या है, मनका मुर्दा होना और मन का मुर्दा होना क्या है, मालिक को भूलना और दुनिया को चाहना ॥

बचन २

लोग कहते हैं कि हम मालिक को पूजते हैं और हक़ीक़त में वे अपने मन के पुजारी हैं। और कहते हैं कि मालिक हमारा सहाई है, और इससे और उससे मदद चाहते हैं, और किसी का शुक्र और किसी की शिकायत करते हैं ॥

बचन ३

दुनिया से होशियार और बचते रहो कि इस ने विद्यावान और बुद्धिवान और धनवानों को अपना ग़ुलाम बना रक्खा है ॥

बचन ४

तीन मर्द भक्त एक औरत भक्त के पास गये और सच्ची भक्ती का ज़िकर करने लगे एक भक्त ने कहा कि उसकी भक्ती पूरी और सच्ची है, जो उस तकलीफ़ में कि उसका मालिक भेजे सबर करे। स्त्री ने कहा कि इस बचन से अहंकार की बू आती है। दूसरे भक्त ने कहा कि जो तकलीफ़ में अपने मालिक का शुकर करे, उसकी भक्ती पूरी और सच्ची है। स्त्री ने कहा कि कुछ इससे बढ़कर कहो। तीसरा भक्त बोला कि जो अपने प्यारे की भेजी हुई तकलीफ़ में रस पावे, उसकी पूरी और सच्ची भक्ती है। फिर स्त्री भक्त ने कहा कि इससे भी बढ़कर कहो। तब तीनों भक्त बोले कि अब आपही कहो। तब वह बोली कि मैं उसकी भक्ती पूरी और सच्च जानती हूं, जो कि तकलीफ़ को अपने प्यारे के ध्यान और दर्शन में इस क़दर भूल जावे, कि उसको उस तक-लीफ़ की ख़बर भी न होवे॥

बचन ५

जिस पर मालिक मेहरबान होता है, तो उसका दिल अक्सर ग़मगीन और उदास रखता है। और जिस पर उस की नज़र मेहर को नहीं है, उसको

दुनिया का सामान और ऐश और आराम ज़्यादा देता है ॥

वचन ६

दुनिया से प्रीत लगानी तो आसान है, पर उस से अलहिदा होना, और छूटना निहायत मुश्किल है। जिस किसी को जिस क़दर दुनिया के ऐश और आराम का सामान दिया गया है, उसकी एवज़ में उससे सौ गुना परमार्थ घटा दिया गया है। अगर दुनिया सोने की होती और परमार्थ मिट्टी का, तो भी चाहिये था कि लोग परमार्थ ही को क़बूल करते मगर अफ़सोस है कि परमार्थ सोना और हीरा है, और दुनिया ख़ाक है, और फिर लोग ख़ाक को ही चाहते हैं ॥

वचन ७

जिसका मन इन तीन कामों में बिल्कुल संग न देवे तो जानना चाहिये कि अभी उस पर मालिक की दया नहीं आई। एक मालिक के बचनों के पाठ और सतसंग के वक़्त दूसरे मालिक के नाम के सुमिरन और भजन के वक़्त, तीसरे मालिक के स्वरूप के ध्यान के वक़्त ॥

वचन ८

भक्ती में तीन परदे है, इन तीनों को मन से हटाना चाहिये तब परमार्थ और भजन का पूरा रस आवेगा और मालिक का दर्शन पावेगा (१) पहिला यह कि जो इस लोक और परलोक का राज और भोग उस को दिये जावें और वह उसको पाकर मगन न होवे। क्योंकि जो मगन हो गया तो लालची है, और लोभी को दर्शन नहीं मिलेगा, (२) दूसरा परदा यह है कि जो इस लोक और परलोक का राज और भोग उसको हासिल है, और वह उस से छीन लिया जावे तो दुखी न होवे और अफ़सोस न करे क्योंकि जो अफ़सोस किया तो झूठा है और झूठा परमार्थ के क़ाबिल नहीं है (३) तीसरा परदा यह कि चाहे जिस क़दर कोई अस्तुत और आदर करे, उस पर अपने मन में ख़ुश न होवे और ग़ाफ़िल न हो जावे क्योंकि जो ऐसा है तो ओछा पात्र है और अभी ऊंचे देश और गहरे रस के क़ाबिल नहीं है॥

वचन ६

शाह इबराहीम ने [जो बलख़ देश की बादशाही को छोड़कर फ़क़ीर हुआ] कहा है, कि एक वक़्त मैं ने एक गुलाम ख़रीद किया, और उस से पूंछा

कि तेरा नाम क्या है, उसने जवाब दिया कि जिस नाम से आप पुकारें। फिर मैं ने पूछा कि क्या खायगा, उसने जवाब दिया जो आप खिलावेंगे। फिर मैं ने कहा क्या पहिनेगा, वह बोला जो आप पहिनावेंगे। फिर मैंने कहा क्या काम करेगा, बोला जो आप हुक्म करेंगे, फिर मैं ने कहा क्या चाहता है, तो जवाब दिया कि बंदे को अपनी चाह नहीं उठानी चाहिये, जो मालिक की मरज़ी और चाह है, वही उसकी चाह होनी चाहिये। फिर मैं ने अपने दिल में सोचा कि तू भी इसी तरह से मालिक का बंदा है, और इस क़दर उमर तेरी गुज़र गई और अब तक चरन सरन और भक्ती की रीति न जानी, यह ख़्याल करके मैं बहुत रोया॥

वचन १०

किसी ने शाह इबराहीम से पूछा कि किस तरह गुज़रान करते हो, जवाब दिया मैं ने चार दस्तूर मुक़र्रर किये हैं:-(१) पहिला जब कोई ख़ास दया होती है, तब शुकर करके चरनों की तरफ़ दौड़ता हूं, (२) दूसरे जब कोई क़सूर बन पड़ता है, तब पछताता हूं और अंतर में प्रार्थना करता हूं, (३) तीसरे जब कभी तकलीफ़ आती है, तब सबर और बरदाश्त

के साथ उसकी अगवानी करता हूं, (४) चौथे जब भजन और सेवा दुरुस्त बन आती है, तब प्रेम के साथ क़दम आगे रखता हूं ॥

वचन ११

जो कोई अपने गुरू की आज्ञा में न बरतेगा, वह कभी सेवक नहीं बनेगा और जो गुरू से डरता है और गुरू ही की तरफ़ दौड़ता है, उसी का एक दिन सच्चा उद्धार होवेगा ॥

वचन १२

मालिक कहता है कि जो तू मुझ से मिलना चाहता है तो वह चीज़ भेंट लेकर आ जो मेरे पास नहीं है, और वह चीज़ सच्ची दीनता है ॥

वचन १३

दो बातें याद रखनी चाहिये एक यह कि मालिक तेरा अंतरजामी है; दूसरे यह कि जो कुछ तू करता है वह उसको देखता है ॥

वचन १४

एक सेवक ने अपने गुरू से पूंछा कि सेवा और भजन में बराबर रस क्यों नहीं मिलता है जवाब दिया कि जो बराबर रस हर रोज़ मिलता रहेगा तो बिरह

और तड़प नहीं उठेगी और इस सबब से तरक़्क़ी बंद हो जावेगी ॥

वचन १५

जो मालिक के प्यारे हैं, उनमें तीन सिफ़तें ज़रूर होंगी, (१) उदारता, (२) दया, (३) और ख़ातिरदारी सच्चे परमार्थी की ॥

वचन १६

अच्छे लोगों की संगत अच्छे काम करने से बेहतर है, और बुरे लोगों की संगत बुरे काम करने से बदतर है ॥

वचन १७

जो कोई तुझ को कुछ देवे तो पहिले मालिक का शुकर कर, और उसके पीछे उस शख़्स का शुकर कर जिसके दिल को मालिक ने प्रेर कर तुझ पर मेहरबान किया। और जो कोई मुसीबत तुझ पर आवे, तो दीनता के साथ मालिक की प्रार्थना कर क्योंकि जो तू सबर और बरदाश्त नहीं कर सक्ता है, तो मालिक तुझ पर दया करेगा। और प्रार्थना फ़ौरन कर, क्योंकि जो पछताकर प्रार्थना करता है वह नादान है ॥

वचन १८

असल बंदगी और भजन यह है, कि सच्चा ख़ौफ़

और सच्चा भरोसा और विश्वास और सच्ची प्रीत मालिक के चरनों में होवे; निशान ख़ौफ़ का यह है कि पाप करम छोड़ देवे, और निशानी सच्चे भरोसे और विश्वास की यह है कि हमेशा मालिक का भजन और याद करता रहे; और निशान प्रीत का यह है कि शौक़ दर्शन का दिन २ बढ़ता रहे ॥

वचन १९

जो कोई ख़ूब पेट भरकर खाता है, उसमें यह पांच इल्लतें पैदा होती हैं, (१) एक यह कि भजन में उसको रस नहीं मिलता, (२) दूसरे उसकी तनदुरुस्ती में फ़र्क आता है, (३) तीसरे दयावंत कम होता है, (४) चौथे मालिक की सेवा और भजन उसको भारी पड़ती है, (५) पांचवें मन उसका ज़बर हो जाता है ॥

वचन २०

तीन वक़्त अपने मन को होशियार रक्खो। एक करतूत के वक़्त याद रक्खो, कि मालिक तुझको देखता है, और जब बात करो तो याद रक्खो कि जो कुछ कि तू कह रहा है मालिक सुनता है, और जब चुप हो तो याद रक्खो, कि मालिक जानता है कि तू किस वास्ते चुप हुआ है ॥

वचन २१

जो मन कि विद्या और बुद्धि और चतुराई से भरा हुआ है वह सब के मनों से ज़्यादा सख़्त हो जाता है और ऐसे कठोर मन की पहिचान यह है कि हमेशा नाक़िस तदबीरों और बहाना बाज़ियों में बंधा रहता है, और अपनी समझ और तदबीर के आगे, गुरू या मालिक के हुक्म को क़बूल नहीं करता ॥

वचन २२

परमार्थी को इन तीन बातों का लिहाज़ रखना चाहिये एक यह कि जो किसी को फ़ायदा न पहुंचा सके तो नुक़सान भी न पहुंचावे; दूसरे जो किसी को ख़ुश नहीं कर सके, तो नाख़ुश और दुखी भी न करे; तीसरे अगर किसी की तारीफ़ करना नहीं चाहे तो बुराई भी न करे ॥

वचन २३

परमार्थी को इन दस नाक़िस बातों से परहेज़ करना गोया काल के जाल से बचना है, (१) सूमता, (२) अहंकार, (३) मान, (४) ईर्षा, (५) छल और कपट, (६) क्रोध, (७) हिर्स और तृष्णा खान पान में, (८) बेमौक़े और बेफ़ायदा बोलना, (९) चाह और प्रीत धन और माल की, (१०) चाह और प्रीत मान बड़ाई

और मर्तबा और हुकूमत की और इन दस भली बातों को इख़्तियार करना गोया मालिक को प्रसन्न करना है, (१) पछताना और प्रार्थना करना अपने क़सूरों पर, (२) सबर और धीरज, (३) जैसे बने तैसे मालिक की मौज पर राज़ी होना, (४) शुकराना मालिक की दात और दया का, (५) ख़ौफ़ मालिक को नाराज़गी का, (६) भरोसा मालिक की दया और बख़्शायश का, (७) बैराग चित्त में रखना, (८) सेवा और भजन मालिक का करना, (९) सब के साथ मित्र भाव से बर्तना, (१०) बढ़ाना प्रेम का सतगुरु और मालिक के चरनों में ॥

वचन २४

इन पांच बातों को याद रखना ज़रूर चाहिये एक किसी की पीठ पीछे बुराई न करना. दूसरे किसी के भेद या गुप्त बात को प्रगट न करना, तीसरे झूठ बात न बोलना, चौथे सतगुरु की आज्ञा में बर्तना, पांचवें चोरी न करना अंतर या बाहर ॥

वचन २५

शैतान हज़रत मूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मैं आप को तीन बातें सिखाता हूं ताकि मालिक से आप मेरे हक़्क़. में दुआ नेक मांगें

उन्होंने पूछा कि वह तीन बातें क्या हैं कहा कि क्रोध और तुनक मिज़ाजी से परहेज़ कीजिये, क्योंकि जो कोई तेज़ मिज़ाज और हलूका होता है यानी जल्द भड़क उठता है उस्से मैं ऐसे खेलता हूं जैसे लड़के गेंद से कि जिधर चाहा गेंद को फेंक दिया, दूसरे औरतों से बचे रहिये क्योंकि संसार में मैं ने जितने जाल और फंदे बिछाये हैं, उन सब से ज्यादा मज़बूत और भारी फंदा औरतों का है, और मुझे इस फंदे का पूरा एतबार है, तीसरे कंजूसता से बचिये क्योंकि जो कंजूस होता है, उसका मैं संसार और परमार्थ दोनों मटियामेल कर देता हूं॥

बचन २६

जिसमें यह तीन बातें यानी संतोष और मालिक का ख़ौफ़ और दर्शन की बिरह और बेकली नहीं हैं उसका उद्धार मुश्किल है॥

बचन २७

किसी अभ्यासी से पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं करते, कहा कि दो भूतों से लड़ने की मुझ में ताक़त नहीं है। एक तो मेरा मन भूत है दूसरे उसका मन होगा, मैं अकेला दो भूतों से किस तरह लड़ सकूंगा॥

बचन २८

तीन काम न करने चाहिये चाहे उसमें किसी क़दर लोगों का ज़ाहिरी उपकार भी होवे (१) राजों और अमीरों का संग, (२) दूसरा किसी स्त्री के साथ अकेले बैठना उठना, चाहे वह परमार्थी होवे और तू उसे परमार्थ ही सिखाता होवे, (३) तीसरे कानों का कच्चा होना कि इस में बहुत हर्ज और नुक़सान पैदा होते हैं ॥

बचन २९

थोड़ा सा हाल मनमुख और गुरुमुख की चाल का लिखा जाता है, जिससे अपनी हालत की परख होती रहे ॥

(१) गुरुमुख का मतलब कुल्ल परमार्थी करतूत से यह रहता है कि मालिक और सतगुरु प्रसन्न होवें; मनमुख सब कामों में अपने मन और इन्द्री का बिलास और प्रसन्नता देखता है ॥

(२) गुरुमुख भूख प्यास को सहता है ताकि उसका भजन बंदगी अच्छी तरह बने; मनमुख जानवरों की तरह खाने पीने में मगन होता है, और परमार्थी करतूत में मन नहीं लगाता है और आलस करता है ॥

(३) गुरुमुख हमेशा बिचार में रहता है और डरता

है, मनमुख तृश्ना और चाह दिन २ बढ़ाता है और बेफ़िकर और निडर रहता है ॥

(४) गुरुमुख सतगुरु के सिवाय सब से बेख़ौफ़ रहता है मनमुख सतगुरु के सिवाय सब से डरता है ॥

(५) गुरुमुख सतगुरु के सिवाय सब से निरास रहता है मनमुख सतगुरु के सिवाय सब से आस रखता है ॥

(६) गुरुमुख धन को परमार्थ पर नौछावर करता है; मनमुख परमार्थ को धन पर नौछावर करता है यानी धन के लिये अपने परमार्थी नुक़सान का ख़्याल नहीं करता है ॥

(७) गुरुमुख भजन और बन्दगी करता है और रोता है; मनमुख गुनाह करता है और हंसता है ॥

(८) गुरुमुख तनहाई और एकान्त को पसन्द करता है; मनमुख भीड़ भाड़ और शोर गुल से राज़ी होता है ॥

(९) गुरुमुख जोतता और बोता है पर डरता है कि शायद खेत न काटने पाऊं; मनमुख न जोतता है और न बोता है पर आसा बांधता है कि काट कर खलियान लगाऊं ॥

(१०) गुरुमुख शरमीला और हयादार होता है; मनमुख ढीठ निलज्ज और बेहया होता है ॥

(११) गुरुमुख कम गो कम रंज और सच्चा है; मनमुख बकवादी ज़ूदरंज और झूंठा है॥

(१२) गुरुमुख सब काम सलाह और धीरज के साथ करता है; मनमुख सब काम बे सोचे समझे और घबराहट के साथ पूरा करना चाहता है॥

(१३) गुरुमुख भजन और ध्यान में लौलीन रहता है; मनमुख ऐंड़ने और सोने में मगन रहता है और बेफ़ायदा वक्त खोता है॥

(१४) गुरुमुख सब का हितकारी है; मनमुख ख़ुद मतलबी है॥

(१५) गुरुमुख की बड़ाई सब के मन में समा जाती है; मनमुख सब के मनों से गिर जाता है॥

(१६) गुरुमुख जो मालिक ने दिया है उस में सबर करता है और शुकर करता है, मनमुख बेसबर और नाशुकरा है॥

(१७) गुरुमुख का दिल फूल से ज्यादा कोमल होता है; मनमुख का दिल पत्थर से ज्यादा सख़्त होता है॥

(१८) गुरुमुख किसी बात की तमा नहीं रखता क्योंकि वह कहता है कि मालिक ने मेरे लायक़ मुझे बहुत दे रक्खा है, और उसी में राज़ी रहता है॥

मनमुख लालची है उसकी तृश्ना कभी नहीं बुझती

चाहे जितना उसको मिल जावे. इस सबब से वह हमेशा दुखी और नाराज़ रहता है॥

(१९) गुरुमुख कभी गालियां बुरा लफ़्ज़ मुंह से नहीं निकालता है; मनमुख अक्सर गाली के साथ बोलता है, और बुरा लफ़्ज़ निकालते उसे शरम नहीं आती॥

(२०) गुरुमुख सतगुरु की याद और दर्शन में मगन रहता है; मनमुख दर्शनों में रूखा सूखा और फीका रहता है॥

(२१) गुरुमुख की बोली मीठी है क्योंकि वह हमेशा अमृतरूपी वचन सतगुरु की महिमा और उनके गुणानुवाद में पगी रहती है; मनमुख की बोली कड़वी है क्योंकि वह हमेशा संसार की बुराई और भलाई में सनी रहती है॥

वचन ३०

जीव को अपनी कसरों की चार तरह से ख़बर पड़ सक्ती है। एक तो गुरू के सतसंग से कि वे दया कर के इसकी कसरों को जतावेंगे, दूसरे हितकारी सतसंगी के पास बैठने से, कि वह प्रीत की रीत से इस की कसरों को दिखाता और समझाता रहेगा, तीसरे निंदक और विरोधी के वचन सुनने से, क्योंकि उसकी

नज़र हमेशा ऐबों पर पड़ती है, और वह बग़ैर किसी लिहाज़ के उनको प्रगट कर देता है, चौथे और जीवों के हालात को ग़ौर से देखने और सुनने से और जो कसरें उनमें दीखें उनको अपने ऊपर घटा कर उनसे परहेज़ करना ॥

बचन ३१

वह बड़ा मूरख है जो अपने को उत्तम जानता है; और वह बड़ा अक़लमंद है जो अपनी कसरें निहारता रहता है। क्योंकि जो अपने तईं रोगी नहीं जानेगा वह अपना इलाज न कर सकेगा। और यह जीव मन के रोगों में ग्रसा हुआ है, और इस बीमारी का दूर करना ज़रूर है ॥

बचन ३२

जो साधू राजा लोग और बड़े आदमियों के पास जाता है, वह अपने परमार्थ को गंवाता है। क्योंकि उनके ख़ुश करने के वास्ते वह ऐसी बातें और काम करेगा, जिनके सबब से सच्चे मालिक की अप्रसन्नता होगी ॥

बचन ३३

किसी ने एक साधू से कहा कि मैं तुम्हारा सतसंग चाहता हूं, उसने कहा कि दीनता करनी पड़ेगी फिर

कहा कि मैं मालिक को चाहता हूं, उसने जवाब दिया कि जो मुसीबत और तकलीफ़ आन कर पड़े उसको ख़ुशी से झेलना पड़ेगा ॥

वचन ३४

सतगुरु अपने सेवक को वक्त़ मुसीबत और तकलीफ़ और नुक़सान वग़ैरह के इस तरह आज़मायश करते हैं, जैसे सुनार सोने को आग से आज़माता है। कोई सोना ख़ालिस निकलता है और कोई ख़राब यानी मिलौनी का ॥

वचन ३५

एक साधू ने एक शख़्स को बीमार देख कर मालिक के चरनों में प्रार्थना की कि हे मालिक इस पर दया कर, मालिक ने फ़रमाया कि इस पर और क्यों कर दया करूं मैं तो इसी बीमारी के सबब से इस पर दया कर रहा हूं क्योंकि उसके करम इसी तरह काटने के लायक़ हैं, और उसकी अंतरी तरक़्क़ी इसी बीमारी के सबब से होगी ॥

वचन ३६

जो कोई थोड़ा बहुत रोगी बना रहता है, उस पर परमेश्वर की दया है, क्योंकि इसके सबब से वह बहुत से गुनाहों से बच जाता है। ईश्वर का बचन है कि

जो मेरे भक्त हैं उनको मैं तीन बातें देता हूं निरधनता, बीमारी, और निरादर। इसी जुगत से मैं अपने भक्त की रक्षा करता हूं॥

बचन ३७

एक ने किसी साधू से पूछा कि साधू किस का नाम है। उसने जवाब दिया कि जिस क़ी बातों से भजन की कैफ़ियत और प्रेम की हालत दिल में पैदा होवे और शौक़ बढ़े। और जिसका चुप रहना बिल्कुल ध्यान और बिचार की हालत है, और देखना बिल्कुल बैराग और इबरत और नसीहत लेना॥

बचन ३८

किसी ने एक साधू से पूछा कि ऐसी बात मुझे बताइये. जिस्से मालिक मुझको दोस्त रक्खे, और प्यार करे, कहा कि संसार और मन के संसारी अंगों को दुश्मन यानी परमार्थ में बिघन कारक ज़ान, मालिक तुझको दोस्त रक्खेगा यानी तुझ पर दया करेगा॥

बचन ३९

जिसने इन छः बातों को इख़्तियार किया वह सतगुरु का प्यारा हुआ, और चौरासी के चक्कर से बच कर निज घर मे पहुंचने का अधिकारी हुआ (१) एक सतगुरु की जिस क़दर बन सके पहिचान करना

और उनकी आज्ञा में वर्तना. (२) दूसरी मन को जानना और उसके कहने में न चलना, (३) तीसरी सत्य वस्तु को पहिचानना और उसको जकड़ कर पकड़ना. (४) चौथी झूठी और असार वस्तु को जानना और उससे हाथ खींचना. (५) पांचवीं संसार को जांचना और उसमें होशियारी से वर्तना यानी फंसना नहीं। (६) छठी परमार्थ की क़दर जानना और उस को दृढ़ कर पकड़ना, यानी उसके मुवाफ़िक़ अपनी करनी और रहनी दुरुस्त करना॥

वचन ४०

इस संसार में जो वस्तु कि मालिक ने तुमको दी है वह पहिले भी किसी को दे चुका होगा। और जब तुम नहीं रहोगे तब भी किसी को देगा। फिर ऐसी नापायदार चीज़ पर कि ज़रूर छोड़नी पड़ेगी दिल नहीं लगाना चाहिये। सुबह शाम के खाना खाने और तन ढकने के सिवाय और कुछ तुम्हारा हिस्सा नहीं है. इतने के वास्ते काहे को अपने तईं इस क़दर खपाते हो। सतगुरु के चरनों में पहुंच कर उस चीज़ की प्राप्ती के वास्ते क्यों नहीं कोशिश और मिहनत करते कि जो हमेशा रहे और तुम भी उस का हमेशा आनन्द ले सको॥

बचन ४१

मालिक की प्रीत और प्रतीत सहित सेवा एक घड़ी की सत्तर वर्ष की बे प्रीत और प्रतीत की सेवा से बेहतर है ॥

बचन ४२

परमार्थ तीन बातों में है, ख़ौफ़. उम्मैद, और मुहब्बत । ख़ौफ़ क्या है जो बातें परमार्थ में मने हैं उनसे परहेज़ करना । उम्मैद क्या है सेवा और भजन पित्ता मार के करना, जिससे एक दिन अपने निज मुक़ाम को पा जावेगा । मुहब्बत क्या है मालिक की मौज और हुक्म में राज़ी रहना ॥

बचन ४३

सवाल—अभ्यासी सेवक कब सच्चे हिरदे से बिनती और प्रार्थना करता है. और कब सच्चे मन से अंग २ उसका सेवा और भजन में लगता है और कब सच्चा होकर मन के बिकारों को छोड़ता है ॥

जवाब—जिस वक्त मन उसका सच्चा डरता है और ख़ौफ़ खाता है, या जब उसके मन में गहरा प्रेम पैदा होता है ॥

बचन ४४

मालिक ने अपने तईं जीवों से मसलहत समझ

कर गुप्त रक्खा है और जो संत या फ़क़ीर उसके भेदी हैं वह भी संसार में इसी तरह गुप्त रहते हैं और जो मौज होवे तो प्रगट हो कर उसका भेद कहते हैं ॥

बचन ४५

सवाल—परम पद के उपदेश का सच्चा और पूरा अधिकारी कौन है ॥

जवाब—परम पद के उपदेश का सच्चा अधिकारी वह है जिसमें यह तीन बातें पाई जावें (१) एक निरलोभी होना, यानी जिसके नज़दीक सोना चांदी और मिट्टी बराबर हों, (२) दूसरी यह कि संसारियों के बचन की क़दर उसके मन से बिल्कुल जाती रही हो, यानी निन्दा और अस्तुत दोनों उसके नज़दीक समान हों, न अस्तुत में ख़ुशी और न निन्दा में दुखी (३) तीसरी यह कि मन की तरङ्गों और बिकारों में न वर्तने में ऐसा ख़ुश होता होवे, जैसा कि संसारी उनके वर्तने में मगन होते हैं। वही परम पद के उपदेश का अधिकारी है ॥

बचन ४६

जो कोई मालिक की याद में ऐसा लगा रहता है कि और कामों की उसको सुध नहीं रहती, तो मालिक उसके ज़रूरी कामों की आप सुध लेता है, और

उनको दुरुस्त बना देता है। यानी सब तरह से रक्षा और सम्हाल अपने भक्त की वह आप करता है॥

वचन ४७

मालिक का जलवा और ज़हूर यानी प्रकाश अंतर में प्रगट है, यानी जो करतूत कि हम करते हैं उसको वह देखता है, पिता के रूबरू लड़का बदफ़ैली नहीं करता, इस वास्ते हमको भी चाहिये कि अपने सच्चे पिता यानी मालिक के रूबरू बुरे काम सोचने और करने से डरें॥

वचन ४८

सच्चे और कपटी भगत की क्या पहिचान है। सच्चा अन्तर और बाहर एकसां बर्तता है, उसके किसी काम में दिखावा और नमूद नहीं होती, और कपटी दिखावे और नमूद के काम ज़्यादा करता है, पर उसके अन्तर में मालिक की प्रीत कम होती है, और धन का प्यार उसके दिल में ज़्यादा रहता है। इसी वजह से उसका मन दो रुखा है जैसे कि रुपया कि जिस की दोनों तरफ़ें एकसां नहीं होतीं॥

वचन ४९

ख़ास दया मालिक की उस शख़्स पर जाननी चाहिये जिसको वह अपने चरनों की सच्ची प्रतीत

बख्शे। यह प्रतीत ऐसी रोशनी है जो मालिक और जीव के बीच में जितने परदे हैं सब को दूर कर देती है॥

बचन ५०

मालिक के सच्चे प्रेम और दर्शन के हासिल करने के वास्ते चार दरियाओं को पार करना चाहिये. तब उसके चरनों में पहुंचना मुमकिन है। (१) एक संसार और किश्ती (नाव) उसकी बैराग है, (२) दूसरा संसारियों का संग, और किश्ती उसकी सतगुरु का संग और संसारियों से जिस क़दर बने दूर रहना है, (३) तीसरा मन, और किश्ती उसकी प्रीत सहित सुमिरन और ध्यान और शब्द का श्रवन है, (४) चौथा गुनावन और तरंगें, और किश्ती उसकी मालिक के चरनों का प्रेम और चित्त को एकाग्र करके चरनों में लगाना है॥

बचन ५१

मालिक के प्रेमियों का हिरदा मालिक के भेद और प्रेम का एक संदूक़चा है। और वह अपना यह अनमोल जवाहर ऐसे संदूक़चे में नहीं रखता है जिस में संसारी चीज़ें रक्खी हुई हैं. यानी सच्चे मालिक की प्रीत उसी दिल में पैदा होगी जो दुनियां की ख़्वाहिशों से ख़ाली है, और वही उसके भेद को जानेगा॥

वचन ५२

जो आंख कि अपने मालिक के नूर और जमाल के देखने में मश्ग़ूल न होवे, अंधी बेहतर है, और जो ज़बान कि उसके गुणानुवाद के गाने में मगन न होवे, गूंगी भली है, और जो कान कि सतगुरु का बचन और मालिक का अन्तरी शब्द श्रवन करने में न लगा रहता हो, बहरा अच्छा है, और जो तन कि उसकी सेवा में न लगे, वह नाकारा है॥

वचन ५३

जो वक़्त कि गुज़र जाता है फिर वह हाथ नहीं आता है। इस वास्ते वक़्त से ज़्यादा कोई क़ीमती चीज़ नहीं है। इसकी क़दर हमेशा चित्त में रखना चाहिये और उसको बेफ़ायदा और बुरे कामों में ख़र्च नहीं करना चाहिये। जहां तक बने सतगुरु और मालिक की सेवा और वंदगी और याद में ख़र्च करो ताकि यहां और वहां दोनों जगह फ़ायदा और सुख हासिल हो॥

वचन ५४

जो काम कि मालिक के निमित्त किया जाता है उसमें बंधन नहीं होता है, पर जो करम मालिक के निमित्त न होगा, उसमें मन का बंधन ज़रूर होगा

इस वास्ते फल की आशा छोड़ कर सब काम मालिक के चरनों में अर्पन करके, यानी मौज के आसरे करना चाहिये, ताकि मन फंसने न पावे, क्योंकि मन के बंधन से दुख सुख पैदा होता है ॥

वचन ५५

जो लोग कहते हैं कि मालिक है, और फिर उसकी बंदगी और उसके चरनों में प्रीत नहीं करते, और बानी पढ़ते हैं, और फिर उस पर अमल नहीं करते; और मालिक की दात भोगते हैं और फिर उसका शुकर नहीं करते; और जानते हैं कि भजन करके महासुख का स्थान प्राप्त होगा फिर उसकी चाह नहीं उठाते; और समझते हैं कि बिना भजन नर्क और चौरासी में जावेंगे, और फिर उसका ख़ौफ़ नहीं करते; और जानते हैं कि काल और मन बैरी हैं और फिर उन्हीं के कहने में चलते हैं; और जानते हैं कि मौत सिर पर खड़ी है, और फिर उसका सामान नहीं करते; और बहुतेरों को गाड़ दिया और फूंक दिया पर अपने मरने का ख़ौफ़ नहीं करते और औरों की कसरें देखते हैं, और अपनी कसर दूर नहीं करते; ऐसे शख़्सों की दुआ और प्रार्थना किस तरह मालिक क़बूल करे ॥

वचन ५६

जो कोई कि बहुत खाना खाता है, या बहुत कम खाता है, और वह जो बहुत कम सोता है या बहुत सोता है, वह कभी परमार्थ दुरुस्ती से नहीं कमा सक्ता मगर जो शख़्स खाना खाने और सोने जागने में ऐतदाल रक्खेगा, वह परमार्थ की कमाई बख़ूबी कर सकेगा ॥

वचन ५७

अगर्चे मन में अनेक तरंगें और गुनावनें उठती रहती हैं और उनका रोकना और समेटना एक बार्गी बहुत मुश्किल है मगर बराबर रोज़मर्रा अभ्यास करने से, कोई दिन में मन किसी क़दर सिमट आवेगा, और तरंगें और गुनावनें बेफ़ायदा नहीं उठेंगी । इस वास्ते अभ्यास बिला नाग़ा (नेम से) हर रोज़ करना चाहिये अगर फ़ुर्सत नहीं मिले तो ग़ैर ज़रूरी काम मुल्तवी करदे, मगर अपना नित्त का अभ्यास न छोड़े यानी थोड़ी देर भजन और ध्यान रोज़मर्रा ज़रूर करता रहे ॥

वचन ५८

जो सेवक कि किसी से ईर्षा और विरोध नहीं रखता, और सब से मित्र भाव और नम्रता के संग

बर्तता है और किसी शख़्स या चीज़ में उसके मन को पकड़ नहीं है, और मन का अहंकार और मान जिसने बिल्कुल छोड़ दिया है या छोड़ता जाता है, और आराम और मिहनत जिसके नज़दीक बराबर हैं और क्षमा यानी बरदाश्त और सबर करना जिस की आदत में दाख़िल है, और हमेशा मालिक के चरनों में मिलने की जिसके दिल में अभिलाषा रहती है, और मन को जिसने ज़ेर किया है यानी थोड़ा बहुत क़ाबू में लाया है, और सच्चे मालिक के चरनों में जिसकी प्रतीत दृढ़ और मज़बूत है, और मन और बुद्धी दोनों को मालिक के चरनों पर नौछावर कर दिया है, ऐसा सेवक मालिक का निज प्यारा है॥

बचन ५९

जब तक धुर की दया न होगी पूरे सतगुरु नहीं मिलेंगे। पूरे सतगुरु एक फलदार दरख़्त के मुवाफ़िक़ हैं कि फल भी देते हैं और साया भी करते हैं, जिस ज़मीन में ऐसा दरख़्त न हो, वह ज़मीन ऊसर है, वहां नहीं रहना चाहिये॥

बचन ६०

पूरे सतगुरु जो तवज्जह न करें तो भी उनका

संग नहीं छोड़ना चाहिये। जो सतगुरु दूसरे शख़्स से बात करें, तो इसको यही समझना चाहिये कि मुझ से बोल रहे हैं। और उस बचन को अपने हिरदे में लिख ले क्योंकि ऐसे सतगुरु का सतसंग महादुर्लभ है। अगर यह बराबर उनका सतसंग करता रहेगा, तो एक दिन अजर और अमर देश में बासा पावेगा॥

बचन ६१

परमार्थ का हासिल होना बग़ैर सतगुरु के मुमकिन नहीं है, पर सेवक भी अधिकारी होना चाहिये, कि उनके बचन को चित्त देकर सुने और निर्मल बुद्धी से समझे और उसके मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत करनी करे॥

बचन ६२

मालिक का तख़्त अन्तर में है। जो कोई मालिक का अपने अन्तर में खोज करेगा, उसे मालिक का दर्शन प्राप्त होगा और जो कोई बाहर ढूंढ़ता फिरेगा उसे मालिक हरगिज़ २ नहीं मिलेगा। इसकी मिसाल ऐसी है कि बग़ल में लड़का और शहर में ढंढोरा॥

बचन ६३

मन की ख़ासियत है कि जो काम शौक़ से करता

है, उसका रूप हो जाता है। इस वास्ते चाहिये कि सिवाय मालिक के किसी चीज़ में सच्ची प्रीत न करे॥

वचन ६४

सवाल व जवाब

(१) सवाल–सतगुरु से क्या मांगना चाहिये।

जवाब–भक्ति और प्रेम मालिक के चरनों का॥

(२) सवाल–सतगुरु के संग क्या फ़र्ज़ है।

जवाब–उनके हुक्म में चलना॥

(३) सवाल–उमर क्योंकर गुज़राननी चाहिये।

जवाब–मालिक की याद में, और जहां तक मुमकिन होवे सब को राज़ी रखिये, क्योंकि मालिक का वचन है कि जो कोई मेरे जीवों को राज़ी रखता है, मैं उससे राज़ी रहता हूं॥

(४) सवाल–आदमी को कौन काम करना बेहतर है।

जवाब–परमार्थ का कमाना॥

(५) सवाल–परमार्थ से क्या फल मिलता है।

जवाब–पशु से आदमी और आदमी से देवता बन जाता है, इससे ज़्यादा और बहुत बड़े दरजे हैं, फिर वह हासिल होते हैं। ग़रज़ कि रफ़ा २ मालिक के सन्मुख पहुंचकर उसका निज प्यारा हो जाता है॥

(६) सवाल–सच्चे मालिक की क्योंकर पहिचान हो सक्ती है।
जवाब–सन्तों की सरन लेने और उनकी जुगत के अभ्यास से॥

(७) सवाल–दुनियां किसको कहते हैं।
जवाब–जो अंत में काम न आवे और मालिक की तरफ़ से बेमुख रक्खे॥

(८) सवाल–मालिक की प्रसन्नता क्योंकर हासिल हो सक्ती है।
जवाब–सतगुरु की प्रसन्नता से॥

(९) सवाल–सतगुरु की प्रसन्नता कैसे हासिल हो सक्ती है।
जवाब–उनके चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करने से और जहां तक मुमकिन होवे उनकी आज्ञा में बर्तने से और उनकी सेवा में तन मन धन का सोच चिन्ता न करे॥

(१०) सवाल–सब कामों से बेहतर कौन काम है।
जवाब–सतसंग करना और भजन करना और उससे फ़ायदा उठाना॥

(११) सवाल–सब कामों में बुरा काम कौन सा है।
जवाब–मालिक को भूलना और धन और भोगों की चाह उठाना॥

(१२) सवाल–सेवक किस को कहते हैं।
जवाब–जो अपने तईं सब से नीच और छोटा जाने और मालिक के चरनों के प्रेम में लौलीन रहे–

कड़ी

"दीन हीन जानो अपने को, निपट नीच मानो अपने को"

(१३) सवाल–यह सिफ़त क्योंकर हासिल हो सक्ती है।
जवाब–संत सतगुरु और साध के सतसंग और दया से, पर जो कोई सच्चा होकर लगे॥

(१४) सवाल–जीव मालिक की याद में क्यों कर लग सक्ता है।
जवाब–मौत की याद रखने और चौरासी के डर से

(१५) सवाल–मंज़िल पर क्योंकर पहुंचना चाहिये॥
जवाब–धीरज के साथ अभ्यास करना, तब कोई अर्से में रास्ता तै होगा॥

(१६) सवाल–गुनाह का इलाज क्या है॥
जवाब–क़सूर करने पर झुरना और पछताना और आइन्दा को होशियार रहना॥

(१७) सवाल–ऐसा कौन शख़्स है जो जहां जावे उसे सब प्यार करें।
जवाब–जो हर एक से दीनता करता है॥

(१८) सवाल–हिम्मतवाला कौन है।

जवाब–जो संसारी सुखों को छोड़कर परमार्थ की कमाई करता होवे ॥

(१९) सवाल–सच्चा हितकारी कौन है ।

जवाब–सतगुरु जो बुराई से तुझ को बचाते हैं और भलाई सिखाते हैं और सख़्ती और तकलीफ़ में तेरी सहायता और मदद करते हैं ।

(२०) सवाल–जो कोई सतसंगी बेजा हरकत करे तो उस्से क्योंकर बचना चाहिये ।

जवाब–उस्से कम मिलने और बात चीत न करने से ॥

(२१) सवाल–क्या जतन करूं कि हकीम का मोहताज कम होऊं ।

जवाब–कम खाओ और कम सोओ और भजन करते रहो ॥

(२२) सवाल–क्या करूं कि सब मुझ को दोस्त रक्खें ।

जवाब–झूंठ मत बोलो और वादाख़िलाफ़ी मत करो और किसी को हाथ और ज़बान से मत सताओ और चित्त में सब से प्यार और दीनता रक्खो ॥

(२३) सवाल–सेवा की कै क़िस्में हैं ।

जवाब–सेवा की तीन क़िस्में हैं, अव्वल तन की सेवा, दूसरे धन की सेवा, और तीसरे मन की सेवा ॥

(२४) सवाल—फल सेवा का क्या है।

जवाब—निश्चलता मन की और निर्मलता अंतःकर्ण की और प्राप्ती मेहर और दया सतगुरु की॥

(२५) सवाल—जवांमर्द कौन है।
जवाब—जो संसार के बिगड़ने से आज़ुर्दा ख़ातिर रंज न करे, और तंगदिल न होवे॥

वचन ६५

एकान्त में बड़ा फ़ायदा है, बशर्ते कि सिवाय मालिक के दूसरे का ख्याल दिल में न आवे, और जो बाहर से एकान्त हुआ और दिल में दुनियावी ख़्यालात भरे रहे, तो वह शख़्स मन और शैतान के संग रहैगा॥

वचन ६६

पांच शख़्सों का संग नहीं करना चाहिये (१) एक जो झूंठ बोलता है और अहंकारी है, (२) दूसरा नादान कि जो तुम्हारे फ़ायदा के वक्त तुम्हारा नुक़सान करा देवे, (३) तीसरा सूम कि मुनासिब वक्त पर तुम को नेक काम में ख़र्च न करने दे, (४) चौथा नाक़िस तबीअत यानी ओछा और कमीना आदमी, कि जो वक्त ज़रूरत पर तुम्हारे काम न आवे, (५)

पांचवा धोखे बाज़ कि अपना लालच देखकर तुम को नुक़सान पहुंचावे॥

वचन ६७

जो कोई औरों को वचन सुनाने का शौक़ ज़्यादा रक्खे, और अन्तर अभ्यास कम करता होवे, तो उसकी समझ ओछी है, और मन अंधा और नादान है, और वह वक़्त अपना मुफ़्त खोता है॥

वचन ६८

जो कोई दुनिया को प्यार करता है उसको भजन का रस कभी नहीं मिलेगा। और जो कोई कामी है उस्से काल निचिंत रहता है, क्योंकि उस्से निर्मल परमार्थ की काररवाई कम बनेगी॥

वचन ६९

ज़बान का सम्हाल कर रखना बहुत मुश्किल है बनिस्बत सम्हाल धन के, यानी नामुनासिब और बेजा बचन ज़बान से नहीं निकालने चाहियें, और न किसी की निन्दा करनी चाहिये॥

दोहा

बोली तो अनमोल है, जो कोई जाने बोल।
हिये तराज़ू तोल कर, तब मुख बाहर खोल॥

वचन ७०

एक औरत भक्त इस तौर पर प्रार्थना किया करती थी, कि हे मालिक जो कुछ सामान दुनिया का मुझ को दिया चाहे, वह उनको दे जो तुझ से भूले हुये हैं और जो स्वर्ग और वैकुंठ के सुख दिया चाहे वह उनको दे जो उन सुखों को तुझ से चाहते हैं मुझ को तो तूही चाहिये है॥

वचन ७१

किसी ने शाह इब्राहीम से कहा कि मुझ को कुछ उपदेश कीजिये। जवाब दिया कि जब तक यह छः बातें न बनेंगी, तब तक भक्ती पूरी न होगी:— (१) पहिली दुनिया के सुख और आराम की चाह छोड़ो, और परमार्थ में मिहनत करो, (२) दूसरी दुनिया का मान और आदर छोड़ो और निन्दा और निरादर सहो, (३) तीसरी सोना कम करो और जागते रहो, (४) चौथी धन और माल की चाह छोड़ो और संतोष इख़्तियार करो, (५) पांचवीं आसा और तृष्णा दुनिया की दूर करो और उससे अचाह हो, (६) छठी जहां तक बने क़सूर न करो और मालिक के चरनों में प्रार्थना करते रहो कि कोई क़सूर

न बन पड़े, और ऐसी करतूत बन आवे कि जिस में उसकी प्रसन्नता होवे ॥

वचन ७२

दूसरे ने उस्से नसीहत चाही।

जवाब दिया कि अगर यह पांच बातें मान सकै तो फ़िर तुझे इख्तियार है कि जो चाहे सो कर:- (१) अव्वल अपने मन से कह कि हे मन मेरे मालिक का भजन बंदगी कर, नहीं तो उसका दिया हुआ रिज़क़ यानी अन्न मत खा, (२) दूसरी हे मन मेरे जिन कामों को मालिक ने मना किया है उनको मत कर, नहीं तो उसके मुल्क के बाहर निकल जा, (३) तीसरी जो तू पाप करम करना चाहता है, तो ऐसी जगह जा कि जहां मालिक तुझको न देखे, नहीं तो पाप मत कर, (४) चौथी हे मन मेरे जो तू मालिक की दात में राज़ी न होवे, तो और मालिक ढूंढ़ जो तुझ को बहुत देवे, (५) पांचवीं हे मन मेरे पहिले इस्से कि मौत आवे, मालिक की भक्ती करले, और यह काम इसी वक्त़ से शुरू कर ताकि धरमराज के पास न जाना पड़े, और नरकों के दुख से बचाव होवे ॥

वचन ७३

जो कोई अपने तईं सब से उत्तम जानता है, वह

नीच है; और जो कोई अपने को सब से ओछा जानेगा, उसकी सब बड़ाई करेंगे ॥

वचन ७४

जो दिल में मालिक के मिलने का शौक़ पैदा करो तो उस मालिक का ख़ौफ़ भी रक्खो, और सब से बढ़ कर काम मन के बरख़िलाफ़ अमल करना है ॥

कड़ी

सतगुरु कहें करो तुम सोई, मनके कहे चलो मत कोई ॥

वचन ७५

जो कोई मालिक को पहिचानना चाहे, तो चाहिये कि पहिले जिस क़दर बने मन को दुनिया के ख़यालों से ख़ाली करे, और उसकी याद में मश्ग़ूल रहे और उसकी सेवा में ठहरा रहे और अपनी भूल चूक पर रोवे और पछतावे ॥

वचन ७६

जब अन्तर की आंख खुलेगी बाहर यानी लिफ़ाफ़ा से नज़र हट जावेगी, तब सिवाय मालिक के और कुछ नहीं दीखेगा ॥

वचन ७७

जीवों के मन तीन तरह के हैं, मन मुरदा, मन ग़ाफ़िल और बीमार, और मन सही और दुरुस्त ॥

मन मुरदा संसारियों का है, जो कि मालिक का भजन नहीं करते हैं, मन ग़ाफ़िल और बीमार गुनहगारों का है, जो पाप करम करते हैं, और मन सही और दुरुस्त उनका है, जो हमेशा होशियार और चैतन्य रहते हैं यानी अपने मालिक से डरते हैं और उसका भजन करते हैं॥

बचन ७८

मालिक की बंदगी और भजन से एक छिन ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये, क्योंकि यह मन बड़ा मक्कार और दग़ाबाज़ है, हर वक़्त इस जीव की घात में रहता है ज़रा भी क़ाबू पाने पर इसका बेशुमार नुक़सान कर देता है॥

बचन ७९

जो कोई तुझ से बदी करे तो उस पर गुस्सा मत कर, और न उससे बदला लेने का इरादा कर, क्योंकि परमार्थी का क्षमा करने में फ़ायदा है, और बुराई करने वाले के साथ गुस्सा करना या बुराई के बदले में बुराई करने में नुक़सान है॥

दोहा।

भलयन से भला करन, या जग का व्यवहार।
बुरयन से भला करन, ते बिरले संसार॥

वचन ८०

एक अभ्यासी जब मरने लगा तो उसने मालिक से अर्ज़ किया, कि अचरज मालूम होता है कि दोस्त की जान दोस्त लेवे, मालिक ने फ़रमाया तअज्जुब मालूम होता है, कि दोस्त दोस्त के दीदार और दर्शन से भागे, यह सुन कर वह ख़ुशी से मरने को तैयार हो गया।

वचन ८१

हज़ारों जीवों में से बहुत थोड़े परमार्थ में क़दम रखते हैं, और सैकड़ों परमार्थियों में से कोई विरले अपने सच्चे मालिक को पहिचानेंगे॥

वचन ८२

सवाल व जवाब।

(१) सवाल—हमारे सच्चे मालिक और निज पिता कौन हैं।

जवाब—तुम्हारे सच्चे मालिक और निज पिता सत्तपुरुष राधास्वामी हैं॥

(२) सवाल—हमें क्योंकर यक़ीन हो कि हमारे सच्चे मालिक और निज पिता सत्तपुरुष राधास्वामी हैं।

जवाब--वे आप इस संसार में जीवों पर अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन करके प्रगट हुये, और अपना भेद उन्हों ने आप गाया, उनकी बानी और वचन के पढ़ने और सुनने से प्रतीत आ सक्ती है, जैसा कि परमेश्वर और ख़ुदा का यक़ीन लोग वेद पुरान क़ुरान और इंजील के पढ़ने से करते आये हैं ॥

(३) सवाल--हमें क्यों कर यक़ीन होकि सत्तपुरुष राधा-स्वामी का दर्जा परमेश्वर और ख़ुदा से ऊंचा और बड़ा है ॥

जवाब--उनकी बानी को वेद पुरान क़ुरान इंजील वग़ैरह कुल्ल आसमानी किताबों से मिलान करने से ॥

(४) सवाल--मालिक का खोज हम कहां करें क्योंकि कहते हैं कि मालिक सब जगह मौजूद है।

जवाब--मालिक का खोज तुम अपने घट में करो, क्योंकि जो मालिक सब जगह है तो तुम में भी है, फिर तुम में तुम से ज्यादा नज़दीक है बनि-स्बत दूसरी जगह के ॥

(५) सवाल--मालिक हम में किस तरह है।

जवाब--मालिक तुम में इस तरह है जैसे फूल में

ख़ुशबू और दूध में घी, और काठ में अग्नि ॥

(६) सवाल–मालिक का दर्शन हम को किस तरह से हो सक्ता है।

जवाब–मालिक का दर्शन तुम को सतगुरु से जुगत लेकर, अपना घट मथन करने से हो सक्ता है जैसा कि घी का दर्शन दूध को तरकीब के साथ बिलोने से होता है। और इतर ख़ालिस (फ़र्क़ दो) फूल में है कई बार खींचने से निकलता है ॥

(७) सवाल–मालिक के दर्शन की हमको क्या ज़रूरत है।

जवाब–मालिक तुम्हारा मिसल सूरज के है, और तुमको रोशनी यानी ज़िन्दगी उसी से मिलती है। ज्यों २ तुम उसके निकट जाओगे तुम्हारी रोशनी बढ़ेगी, और जिस क़दर उससे दूर हटोगे अंधेरे में गिरोगे वह रोशनी महा चैतन्य और महा आनंद स्वरूप है और सब सुखों का भंडार है और तारीकी यानी अंधेरा दुख रूप और चौरासी का घर है ॥

(८) सवाल–मालिक हम में कहा है।

जवाब–मालिक का तख़्त तुम्हारे मस्तक में है।

(९) सवाल–हमारे मालिक का क्या स्वरूप है।

जवाब–तुम्हारे मालिक का शब्द यानी चैतन्य और प्रकाश और प्रेम स्वरूप हैं ॥

(१०) सवाल—हमारा क्या स्वरूप है।

जवाब—तुम्हारा भी शब्द यानी चैतन्य और प्रकाश और प्रेम स्वरूप है॥

(११) सवाल—फिर हम में और हमारे मालिक में क्या भेद है।

जवाब—तुम में और तुम्हारे मालिक में ऐसा भेद है कि जैसे किरन और सूरज में और जैसे बूंद और सिंध में॥

(१२) सवाल—गुरू की परमार्थ में किस क़दर ज़रूरत है।

जवाब—गुरू की परमार्थ में इस क़दर ज़रूरत है, कि जब तक सेवक की सुरत यानी रूह मालिक के चरनों में पहुंचकर ठहरने लगे, और जब चाहे तब चरन रस बख़ूबी ले सके और कोई अटक और रोक दरमियान उसके और मालिक के न रहे जब तक ऐसी हालत न हो अनुरागी सेवक को चाहिये कि गुरू का सतसंग बराबर किये जावे, और उनसे मदद लेता रहे॥

(१३) सवाल—सतसंग की क्या महिमा है।

जवाब—सतसंग की यह महिमा है कि सतगुरु यानी पूरे गुरू के अंतर और बाहर संग करने से वह एक रोज़ उसको अपने समान कर लेते

हैं जैसे कीट भृङ्गी के संग से भृङ्गी रूप हो जाता है।

(१४) सवाल—पूरे गुरू की क्या महिमा है।

जवाब—पूरे गुरू की यह महिमा है कि जिन का सत्तलोक और राधास्वामी पद से सूत लग रहा हो, यानी जिन की रूह उस मुक़ाम तक वक्त भजन के आती जाती है॥

(१५) सवाल—हम ऐसे गुरू को कैसे पहिचान सक्ते हैं।

जवाब—पूरी पहिचान तो बड़ी मुशकिल है, पर जितनी वे अपनी दया से बख़्शें उनके सतसंग करने से हो सक्ती है॥

इति

—